व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गई पूँजी निर्माण की परिभाषा को संक्षेप में अग्रानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है—

"भौतिक एवं मानवीय पूँजी में वृद्धि को पूँजी निर्माण कहते हैं।"

इसके विपरीत संकुचित अर्थ में—

"भौतिक पूँजीगत वस्तुओं में वृद्धि को पूँजी निर्माण कहते हैं।"

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सामान्य जीवन में पूँजी निर्माण किया जाता है।

पूँजी निर्माण का महत्व
(IMPORTANCE OF CAPITAL FORMATION)

अथवा

पूँजी निर्माण की आर्थिक विकास में भूमिका
(THE ROLE OF CAPITAL FORMATION IN ECONOMIC GROWTH)

प्रो. आर्थर लुईस के अनुसार, "पूँजी निर्माण आर्थिक विकास की केन्द्रीय समस्या है।" पूँजी निर्माण की तीव्र गति से ही आर्थिक विकास सम्भव हो सकता है। आर्थिक विकास से आशय प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना है जिसके लिए राष्ट्रीय

1 "Under conditions of forced econmic growth and industrialization capital formation may be viewd as limited to plant, equipment and inventories that are directly serviceable as tools." —*Kunznets*

2 "The term (Capital Formation) is sometimes used to cover human as well as material capital. It can be made to include investment in skills, education and health a very important form of investment." —*Nurkse*

Scanned with CamScanner

आय व उत्पादन-क्षमता में वृद्धि करना आवश्यक होता है। उत्पादन क्षमता में तब तक वृद्धि नहीं हो सकती है जब तक कि राष्ट्रीय आय के अधिकांश भाग का पुनर्विनियोजन न कर दिया जाए अर्थात् पूँजीगत वस्तुओं की मात्रा में वृद्धि न की जाए।

आज अल्पविकसित देशों के अवरुद्ध आर्थिक विकास का एकमात्र कारण पूँजी निर्माण की कमी होना है। संक्षेप में, आर्थिक विकास की दृष्टि से पूँजी निर्माण का विभिन्न क्षेत्रों मे प्राप्त होने वाला योगदान निम्न प्रकार है—

(1) **राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना**—पूँजी निर्माण एवं राष्ट्रीय आय में एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर ही आर्थिक विकास सम्भव हो सकता है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि तब तक नहीं हो सकती जब तक कि पूँजी निर्माण पर्याप्त मात्रा में न हो। राष्ट्रीय उत्पादन के सभी साधनों में सम्भवतः पूँजी ही एक ऐसा साधन है जिसे असीमित मात्रा तक बढ़ाया जा सकता है। **उदाहरण के लिए, प्राकृतिक साधनों व श्रम की मात्रा में वृद्धि करना प्रायः सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि यह दोनों साधन प्रकृति-दत्त माने जाते हैं, इसके विपरीत पूँजी निर्माण की मात्रा में वृद्धि करना भले ही कठिन है परन्तु प्रकृति द्वारा नियन्त्रित नहीं हैं। संक्षेप में, आर्थिक विकास की प्रथम कसौटी राष्ट्रीय आय में वृद्धि होना है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि की प्रथम आवश्यकता पूँजी निर्माण है।**

(2) **तीव्र आर्थिक विकास को बल मिलना**—पूँजी निर्माण से उत्पादन की चक्करदार प्रणालियों में बढ़ोत्तरी होती है। इससे उपक्रमों की उत्पादकता में वृद्धि होती है, पूँजी की गहनता व पूँजी के विस्तार को प्रेरणा मिलती है और इस प्रकार आर्थिक विकास की गति तेज होने लगती है। इतना ही नहीं, पूँजी निर्माण से देश में नये उद्योगों की स्थापना व नव-प्रवर्तनों को बल मिलता है। विनियोग के आकार में वृद्धि होने पर आर्थिक जड़ता समाप्त होने लगती है जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था विकास के मार्ग पर आरूढ़ होकर अपने अन्तिम लक्ष्य की ओर अग्रसर होने लगती है।

(3) **पूँजी निर्माण एवं विषैले वृत्त**—**रागनर नर्क्से** का मत है कि पिछड़े हुए देशों में पाए जाने वाले विषैले वृत्तों को तोड़ने का एक मात्र उपाय पूँजी निर्माण के कार्य में वृद्धि करना है। **सच तो यह है कि किसी देश के आर्थिक विकास में पूँजी निर्माण और विनियोग 'दुहरा कार्य' करते हैं।** उदाहरण के लिए, पूँजी निर्माण से विनियोग-क्षमता बढ़ती है जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है और लोग पहले की अपेक्षा अधिक उपभोगीय वस्तुएँ प्राप्त करने के योग्य हो जाते हैं। इस प्रकार बढ़ी हुई क्रय-शक्ति के कारण देश में माँग का स्तर ऊपर उठने लगता है। माँग-वृद्धि से विनियोगकर्ताओं को प्रोत्साहन मिलता है जिससे उत्पादन बढ़ाया जाता है और फलस्वरूप प्रति व्यक्ति आय में पुनः वृद्धि होने लगती है। यह क्रम इसी प्रकार चलता रहता है और अन्ततः निर्धनता का विषैला वृत्त स्वतः ही विखण्डित हो जाता है।

(4) **प्राविधिक प्रगति का विकास होना**—पूँजी निर्माण से प्राविधिक प्रगति को बल मिलता है। स्मरण रहे, केवल पूँजी के ढेर से आर्थिक विकास नहीं खरीदा जा सकता। आर्थिक विकास के लिए आवश्यकता है कि देश में प्राविधिक अथवा तकनीक का स्तर अत्यन्त विकसित अवस्था में हो और यह तभी सम्भव हो सकता है जब मँहगी तकनीकों को लागू करने की पूँजीगत क्षमता देश में उपलब्ध हो। बढ़ता हुआ पूँजी निर्माण प्राकृतिक साधनों के पूर्ण विदोहन को सम्भव बनाता है; राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि करता है और पुराने व परम्परागत तरीकों को विकसित तकनीक से प्रतिस्थापित करने में सहायक सिद्ध होता है।

(5) **पूँजी निर्माण एवं आर्थिक कल्याण में वृद्धि होना**—आर्थिक कल्याण, आर्थिक विकास पर निर्भर करता है और पूँजी निर्माण आर्थिक विकास का अभिसूचक है। अल्पविकसित देशों में पिछड़े हुए आर्थिक कल्याण का वास्तविक कारण पूँजी व पूँजीगत साधनों का अभाव माना जाता है। पूँजी के अभाव में उत्पत्ति के साधनों का पूर्ण विदोहन नहीं हो पाता, प्राकृतिक साधन अविकसित अवस्था में पड़े रहते हैं। अर्थव्यवस्था का विकास असन्तुलित होता है, उद्यमशीलता का अभाव बना रहता है, उत्पादन की विकसित तकनीक का प्रचलन नहीं हो पाता और फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि न हो सकने के कारण जनता का आर्थिक कल्याण निम्न-स्तरीय बना रहता है। इस दृष्टि से, लोगों के आर्थिक-कल्याण में वृद्धि करने के लिए, आर्थिक विकास को गति प्रदान करनी होगी और आर्थिक विकास का संयन्त्र तभी क्रियाशील हो सकता है जब पूँजी जैसे तरल पदार्थ का निर्माण किया जा सके।

(6) **मानवीय पूँजी निर्माण का विकास**—आधुनिक अर्थशास्त्रियों द्वारा आर्थिक विकास के लिए मानवीय पूँजी के निर्माण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। **मानवीय पूँजी निर्माण से अभिप्राय अभौतिक पूँजी निर्माण से है। जैसे शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्रशिक्षण व कौशल निर्माण पर व्यय-विनियोग करने से देश की श्रम-शक्ति की कार्यक्षमता में सुधार होता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होने लगती है।** अल्प-विकसित देशों के लिए तो मानवीय पूँजी निर्माण का अपना एक विशेष महत्व है। **प्रो. साइमन कुजनेट्स** का मत है कि "किसी देश का पूँजीगत स्टॉक सही अर्थों में लोगों का प्रशिक्षण, चरित्र एवं कार्यकुशलता है।"

Scanned with CamScanner